हिन्दू सामाजिक संरचना एवं कर्मकाण्डीय गत्यात्मकता में राज्य व नागर समाज की भूमिकाः नमामि गंगे कार्यक्रम के सन्दर्भ में एक केस अध्ययन

अनिल कुमार
सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग
श्री ठाकुर जी महाराज स्नातकोत्तर महाविद्यालय
बिल्हौर, कानपुर नगर (उत्तर प्रदेश)
E-mail: anil.aina@gmail.com,

सारांश

सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक क्रियाकलाप, परम्पराओं, संस्कारों एवं कर्मकाण्डों का हमारे स्वास्थ्य एवं सामाजिक पारिस्थितिकी पर सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनो तरह का प्रभाव पड़ता है। सामूहिक प्रतिनिधान सचेतन अवस्था में होने से यह कर्मकाण्ड व्यक्ति को जीवन एवं पर्यावरण के प्रति सजग बनाये रखते हैं। वर्तमान अध्ययन हरदोई जनपद के गंगा तटीय ग्रामों में परम्पराओं, धार्मिक विश्वासों, संस्कार एवं कर्मकाण्डों के तरीकों में निरन्तरता एवं गत्यात्मकता का अध्ययन है, जिसमें नमामि गंगे कार्यक्रम एवं नागर समाज की भूमिका का केस अध्ययन के माध्यम से विश्लेषण किया गया है। यद्यपि यह अनुभव किया गया है, कि गंगा संरक्षण एवं स्वच्छता हेतु किये जा रहे प्रयासों से बड़े व दूरगामी परिणामों के मूर्तरूप लेने में अभी वक्त लगेगा।

मुख्यशब्दः *संस्कार, अन्त्येष्टि, पारिस्थितिकी, प्रदूषण, नागर समाज।*

प्रस्तावना

कर्मकाण्ड दुनिया के सभी समाजों में अलग–अलग स्वरूपों में प्रचलित हैं, लेकिन भारत का हिन्दू समाज कर्मकाण्डों के बिना आस्तित्व विहीन सा लगता है, क्योंकि यहां जन्म के पूर्व से लेकर मृत्यु के बाद तक संस्कार एवं उनसे जुड़े कर्मकाण्डों का अभ्यास जारी रहता है। प्राकृतिक तत्वों से धार्मिक जुड़ाव सरल समाजों से लेकर सभ्य समाज तक विद्यमान रहा है। जहां एक ओर जनजातीय समाज में जंगली तथा जलीय जीव, पक्षी, पहाड़ अथवा किसी पेड़–पौधे को अपना टोटम मानकर उसकी पूजा एवं उससे जुड़े कर्मकाण्ड करते हैं, तो वहीं अपने आप को सभ्य एवं दुनिया के सबसे पुरातन धर्म मानने वाले हिन्दू समाज में नदियों, पर्वत श्रृंखलाओं, मानव निर्मित मूर्तियों के साथ गाय, गंगा, गज, गरूण एवं नाग के प्रति धार्मिक आस्था रखकर कर्मकाण्डीय निरंतरता बनाये रखे हैं। इन धार्मिक परम्पराओं के पालन, कर्मकाण्डों के अभ्यास का मानव जीवन के विभिन्न पक्षों पर समाजीकरण एवं सामूहिकता की भावना के माध्यम से जहां

एक ओर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, वहीं दूसरी ओर इन कर्मकाण्डों का समाज एवं पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव भी पड़ता है। भारत में कुछ कर्मकाण्ड नदियों एवं जल स्रोतों के किनारे प्रचलित हैं, जो वर्तमान में पर्यावरण को छति पहुंचाने का कारण बने, जैसे– नदियों के किनारे धार्मिक मेले में मानवजनित अपशिष्ट; दुर्गा पूजा, गणेश चतुर्थी, नवरात्रि व दीपावली के अवसर पर होने वाले मूर्ति विसर्जन; मुण्डन एवं अन्य मृत्यु पश्चात होने वाली अन्त्येष्टि क्रियाएं (दाह संस्कार, अस्थि विसर्जन, शव प्रवाह आदि) नदियों की निर्मलता को क्षति पहुचाते हैं।

अध्ययन क्षेत्र

वर्तमान अध्ययन हरदोई जनपद के गंगा तटीय ग्रामों में परम्पराओं, धार्मिक विश्वासों, संस्कार एवं कर्मकाण्डों के तरीकों की निरन्तरता एवं गत्यात्मकता का अध्ययन किया गया है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार हरदोई जनपद का नाम हरिद्वियी (ईश्वर के वामन एवं नरसिंह अवतार) अथवा/एवं हरिद्रोही (हरि/विष्णु के विरूद्ध द्रोह) का पदभ्रंश है। यहां वर्णित ईश्वर के अवतारवाद की घटना केवल एक कथानक है, जिसके कोई ऐतिहासिक अथवा पुरातात्विक प्रमाण नहीं मिलते हैं। हरदोई जनपद के उत्तर–पूर्व दिशा में नैमिषारण्य (सीतापुर जनपद) नामक तीर्थस्थल है, धार्मिक मान्यताओं के अनुसार यहां पुराणों, उपनिषदों एवं अन्य धार्मिक ग्रन्थों की रचना हुई थी, लेकिन कर्मकाण्डों के स्वरूप एवं उनकी संस्तरणीय व्यवस्था को देखते हुए कहा जा सकता है कि जाति जैसी संस्तरणीय सामाजिक व्यवस्था के बीज इसी स्थान से उत्पन्न हुए होंगे, जिससे आज भारत पूरी दुनिया में असंख्य संस्तरणीय विविधताओं वाला देश बन चुका है। जनपद के दक्षिण व पश्चिम में रामगंगा, गंगा आदि नदियां यहां की जीवनधारा हैं, क्योंकि यह नदियां न केवल जलस्रोत के रूप में कृषि में सहायक होती हैं, अपितु लगभग प्रतिवर्ष आने वाली बाढ़ के साथ पोषक तत्वों से युक्त चिकनी मिट्टी बहाकर लाती हैं। नदियों के किनारे होने वाले स्नान पर्व, मेले, धार्मिक कार्यक्रमों के साथ अन्तिम संस्कार के कारण भी इन नदियों की समाज में महत्ता है।

इस क्षेत्र में भी हिन्दू परम्पराओं, धार्मिक संस्कारों एवं कर्मकाण्डों में निरन्तरता एवं गत्यात्मकता देखी जा सकती है। यहां एक ओर विवाह एवं अन्तिम संस्कार के कठोर कर्मकाण्ड व रीतिरिवाजों का सम्पादन पुरोहितों के कथनानुसार होता हैं, वहीं दूसरी ओर कुर्मी जाति बाहुल्य ग्रामों में आर्यसमाज के प्रभावस्वरूप इन कर्मकाण्डों को समय एवं पैसों की दृष्टि से कम खर्चीला बनाया गया है। गंगा में बढ़ते कर्मकाण्डीय अतिक्रमण एवं औद्योगिक अपशिष्ट से गंगा का पारिस्थितिक तंत्र बिगड़ने लगा है। इस समस्या के समाधान हेतु भारत सरकार द्वारा स्वच्छ भारत मिशन– ग्रामीण के तहत में खुले में शौच से मुक्त गांव, गंगा सफाई हेतु नमामि गंगे कार्यक्रम आदि संचालित किये जा रहे हैं, जिसमें नागर समाज का सहयोग शामिल है।

अध्ययन का उद्देश्य

वर्तमान अध्ययन का मुख्य उद्देश्य हिन्दू कर्मकाण्डों से उत्पन्न गंगा एवं अन्य जलस्रोतों के प्रदूषण को रोकने में नमामि गंगे कार्यक्रम का एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है। साथ ही यह भी ज्ञात करना है, कि भारतीय सामाजिक संरचना में किस प्रकार संस्कारों एवं कर्मकाण्डों

की निरन्तरता जारी है एवं कौन सी आन्तिरिक एवं वाह्य शक्तियां परिवर्तनकारी हैं।

अध्ययन विधि

वर्तमान अध्ययन हिन्दू कर्मकाण्डों एवं नमामि गंगे कार्यक्रम का रोजमर्रा के जीवन–संसार में घटित होने वाली घटनाओं का अनुभवपरक अध्ययन है। इस अध्ययन के लिए गुणात्मक शोधपद्धति को अपनाया गया है, जिसमें हरदोई जनपद के कुछ केस अध्ययनों के माध्यम से हिन्दू कर्मकाण्डों में गतिशीलता एवं नमामि गंगे कार्यक्रम के प्रभावों का अवलोकन किया गया है।

हिन्दू कर्मकाण्ड एवं सामाजिक गत्यात्मकता

दुर्खीम ने समाज में श्रम विभाजन (1893) एवं धार्मिक जीवन के आरम्भिक स्वरूप (1912) में विभिन्न सामाजिक–सांस्कृतिक अभ्यासों के माध्यम से समाज में प्रचलित सामाजिक कानून प्रणालियों एवं चुनौतियों को समझने का प्रयास किया है। दुर्खीम के अनुसार सामूहिक प्रतिनिधानों की भाषा एवं माध्यम के लिए मानव शरीर एक अनिवार्य क्षेत्र है। यह सामूहिक प्रतिनिधान समाज में प्रतीकों के आन्तरीकरण एवं कर्मकाण्डीय प्रक्रियाओं के माध्यम से क्रियाशील रहता है (Durkheim, 1912/1995:212)। इस आधार पर कहा जा सकता है कि कर्मकाण्ड प्रतीकात्मक अन्तःक्रियाओं का आन्तरीकरण है। गॉफमैन (1967) के एक वक्तव्य को अन्तःक्रियात्मक कर्मकाण्ड के सन्दर्भ में रॉबर्ट एन बेला ने उद्धत किया है। उनके (Goffman 1967; Bellah 2008) अनुसार आधारभूत स्तर पर अन्तःक्रियात्मक कर्मकाण्डों में निम्न तथ्य होते हैं–

1. एक समूह, जिसमें कम से कम दो व्यक्ति भौतिक रूप से शामिल हों।
2. जिनका ध्यान किसी एक कार्य अथवा क्रिया पर केन्द्रित हो, एवं प्रत्येक व्यक्ति इस बात के लिए सचेत/जागरूक रहे कि दूसरे भी ध्यान केन्द्रित करें।
3. जो सामान्य (common) अनुभव एवं भावनाएं साझा करते हों।

इन सामूहिक प्रक्रियाओं की क्रियाशीलता से सामाजिक एकता की भावना प्रबल होती है, फिर चाहे वह अन्तिम संस्कार के कर्मकाण्ड ही क्यों न हों। यह बात अलग है कि अन्तिम संस्कार के समय होने वाले कर्मकाण्डों को किसी एकपक्षीय अथवा एकांगी तरीके से वर्णित किया जाना असम्भव है, क्योंकि कर्मकाण्ड द्वैध एवं बहुसंयोजी मनोवृत्तियों से घिरे रहते हैं (Michaels 2016:201)। इन द्वैध एवं बहुसंयोजी मनोवृत्तियों के पीछे भौतिक (शरीर) एवं अभौतिक (आत्मा) तत्वों के विलगाव से विक्षोभ उत्पन्न होता है। क्योंकि आत्मा एवं शरीर एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं, किन्तु आंशिक रूप से आपस में इस तरह आत्मसात होते हैं, जैसे शरीर का कुछ आत्मा में एवं आत्मा का कुछ शरीर में शामिल हो (Durkheim, 1912/1995: 24)। आत्मा के शरीर से लगाव खत्म करने के लिए ही दाहसंस्कार जैसे कर्मकाण्डों का पालन होता है।

हम सभी यह भी जानते हैं कि अन्तिम संस्कार विभिन्न जनसमुदायों में अलग–अलग तरीके से अनुपालित किये जाते हैं, एवं इसका निर्धारण मरने वाले के लिंग, आयु एवं सामाजिक प्रस्थिति के आधार पर भी होता है (Gennep 1960:146)। जबकि भारतीय समाज में अन्तिम संस्कारों के कर्मकाण्डों को किस प्रकार सम्पादित करना है; इसके लिए मृतक की जाति, धर्म,

सम्प्रदाय, नातेदारी, क्षेत्र, राजनीतिक व आर्थिक परिस्थितियों के साथ मृत्यु के तरीके एवं मृत्यु से पहले पूर्ण हुए संस्कारों आदि से निर्धारित होते हैं।

तालिका–1 : हिन्दू समाज में प्रचलित अन्तिम संस्कार का स्वरूप

क्रम सं0	अन्तिम संस्कार का स्वरूप	समाज में अन्तिम संस्कारों का प्रचलन
1	दाह संस्कार	हिन्दू धर्म की लगभग सभी जातियों में, लेकिन क्षेत्र, ग्राम, समुदाय एवं प्रचलित परम्परा के आधार पर भिन्नता ❖ पवित्र नदी गंगा के किनारे, ❖ अन्य नदियों अथवा जलस्रोतों के किनारे, ❖ सार्वजनिक शमशानघाट, विद्युत शवदाहगृह, ❖ मृतक के खेत पर।
2	प्रवाह विधि	❖ कुछ जातियों में शव को गंगा में प्रवाहित करने की परम्परा रही है। ❖ आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों द्वारा, ❖ सर्पदंश से मृत व्यक्ति, ❖ अविवाहित कन्या की मृत्यु पर, ❖ लावारिस लाशें आदि।
3	दफन विधि	❖ मुण्डन संस्कार से पूर्व मृत बच्चों को नदी के किनारे अथवा गांव से बाहर तालाब के किनारे दफना देने की परम्परा रही है। ❖ हिन्दू धर्म के कबीर पंथी लोग। ❖ नमामि गंगे कार्यक्रम की गंगाघाट समितियों द्वारा शवों को नदी में सीधे प्रवाहित करने से रोक के बाद नदी के किनारे दफन करने की नई परम्परा का प्रादुर्भाव हुआ है।

नोटः उपरोक्त तथ्य समाज में प्रचलित परम्पराओं पर आधारित हैं, जो पौराणिक आधार पर परीक्षित नहीं है।

हिन्दू धर्म के अनुसार जब हम अन्तिम संस्कार के कर्मकाण्डों की चर्चा करते हैं तब हमारा चिंतन केवल शरीर के पंचतत्व में विलीन करने तक ही सीमित नहीं रहता, अपितु आत्मा की शांति एवं उसके पुनर्जन्म अर्थात एक शरीर से दूसरे शरीर में प्रवेश का मार्ग तय करता है। यही कारण है कि हिन्दू धर्म में दाहसंस्कार करने वाले एवं मृतक के परिजनों द्वारा मृत्यु के पश्चात गरूण पुराण सुनने का प्रावधान है, जिसमें कहा गया है कि नश्वर शरीर के त्याग के बिना मोक्ष की प्राप्ति सम्भव नहीं है। यहां जन्म को ही मृत्यु माना गया है, क्योंकि जन्म के साथ जरा एवं मृत्यु का जुड़ाव है। इसलिए बौद्ध दर्शन में दुनिया को जन्म, जरा एवं मत्यु की अनुपस्थिति के रूप में देखने की दशा को ही व्यक्ति की सम्पूर्णता, पवित्रता एवं पूर्ण चेतन अवस्था माना है, ऐसा वयक्ति दुनिया में प्रकट नहीं होता है (*AEguttara-Nikāya* V.144; **Michaels** 2016:198)। हिन्दू धर्म में यह विश्वास किया जाता है, कि आत्मा मरती नहीं अपितु वह पुराने शरीर को त्याग कर

नये शरीर में विस्थापित होती है। इस प्रकार जीवन चक्र की निरन्तरता पुनर्जन्म के रूप में बनी रहती है। दाह संस्कार अथवा अन्त्येष्टि, शरीर को पंचतत्व में विलीन करने के साथ ही आत्मा को अपने नये गन्तव्य की ओर अग्रसर करती है (Sahoo, Kalyanamalini, 2014)। अन्त्येष्टि की जिम्मेदारी मृतक के नातेदार एवं परिजनों की होती है, और यह प्रक्रिया पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहती है।

भारतीय परम्पराओं, संस्कारों एवं कर्मकाण्डों के अभ्यास एवं उनके प्रभावों पर हुए अध्ययनों से ज्ञात होता है, कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक संरचना का हमारे स्वास्थ्य एवं सामाजिक पारिस्थितिकी पर सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनो तरह के प्रभाव पड़ते हैं। स्टेला काह (2007) ने अपने लेख 'स्वास्थ्य एवं संस्कृति' में यह कहने का प्रयास किया है, कि संस्कृति को ध्यान में रखे बिना स्वास्थ्य एवं बीमारी पर समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना अधूरा माना जायेगा। संस्कृति, व्यक्ति के व्यवहार, विश्वास एवं मानदण्डों के प्रसंग में ऐसा महत्वपूर्ण निर्णायक कारक है, जो व्यक्ति की बीमारी एवं मदद लेने के निर्णय को तय करते हैं। यहां तक कि यह भी तय कराती है कि कौन से व्यक्ति अथवा संगठन उसकी ठीक होने में मदद व देखरेख करेंगे।

हमें ज्ञात है कि परम्परायें, विश्वास, संस्कार एवं कर्मकाण्डों के तरीके समय, स्थान एवं परिस्थिति के सापेक्ष परिवर्तशील होते हैं। पर्यावरण एवं तकनीकी विकास के प्रभाव भी इन प्रक्रियाओं में बदलाव का कारण बने हैं। उत्तर प्रदेश में यह प्रचलन है, कि पहले विवाह पूर्व वर एवं उसके परिजनों द्वारा कुआं पूजन की परम्परा निभाई जाती थी, जोकि जीवन में जल तत्व की महत्ता को दर्शाती होगी। लेकिन वर्तमान परिदृश्य में भूजलस्तर में गिरावट एवं नलकूपों, हैण्डपम्पों एवं सबमर्सिबल पम्पों के प्रचलन के फलस्वरूप मैदानी क्षेत्रों में कुओं की उपलब्धता कम हो गयी है, फलस्वरूप कुआं पूजन के स्थान पर बाल्टी में पानी भरकर उसकी परिक्रमा की जाने लगी है। इसी प्रकार विदाई में डोली का स्थान मोटर–कार ने ले लिया है।

आजकल मृत्यु के पश्चात होने वाले कर्मकाण्डों में भी कुछ बदलाव आ रहा है, जैसे– महिलाओं द्वारा अन्तिम संस्कार पूर्णतः वर्जित रहा है, लेकिन अब लड़कियां भी अपने परिवार के सदस्यों का अन्तिम संस्कार करने लगी हैं। नदियों के किनारे होने वाले दाह संस्कार में लकड़ी अथवा अन्य ईंधन के साथ कई शहरों में शमशान घाटों पर विद्युत शवदाहगृह भी प्रयोग किये जाने लगे हैं। सांप के काटने से हुई मृत्यु के अतिरिक्त कुछ समुदायों (स्थान, जाति, आर्थिक स्थिति एवं कर्मकाण्डों की पूर्णता के आधार पर) यह परम्परा रही है, कि शव को गंगा अथवा किसी पवित्र नदी में प्रवाहित किया जाय। नमामि गंगे कार्यक्रम के पश्चात विभिन्न सामाजिक संगठनों द्वारा गंगा में शव एवं अन्य सामग्री प्रवाहित करने की परम्परा रोकने के कारण लोगों ने गंगा के किनारे शवों को दफनाना आरम्भ कर दिया है।

गंगा सफाई में राज्य एवं नागर समाज की भूमिका

नेशनल मिशन फॉर क्लीन गंगा (NMCG) का गठन 12 अगस्त 2011 को एक सोसाइटी के रूप में हुआ था। जिसको राष्ट्रीय गंगा रिवर बेसिन अथॉरिटी (NGRBA) के एक क्रियान्वयन

घटक के रूप में पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम 1986 के तहत स्थापित किया गया था। पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम 1986 को विलोपित करते हुए 7 अक्टूबर 2016 को भारत सरकार के जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा ''गंगा नदी (पुनरूद्धार, संरक्षण एवं प्रबन्धन) प्राधिकरण आदेश 2016'' जारी किया गया। जिसका मुख्य कार्य गंगा एवं उसकी सहायक नदियों के पुनरूद्धार, संरक्षण एवं पारिस्थितिक तंत्र को बचना है।

गंगा नदी (पुनरूद्धार, संरक्षण एवं प्रबन्धन) प्राधिकरण आदेश–2016 के अनुसार, गंगा एवं इसकी सहायक नदियों में सीवेज, व्यावसायिक अथवा औद्योगिक अपशिष्ट प्रवाह रोकने के साथ नदी क्षेत्र में स्थाई/अस्थाई आवासीय अथवा औद्योगिक संरचना निर्माण से रोक लगाई गयी है। उपरोक्त आदेश की धारा 3 (क्यू) के अनुसार उपरोक्त के अतिरिक्त दूषित पदार्थों यथा– पशुओं के शव, रसोई अथवा अस्तबल का अपशिष्ट, गोबर, कचरा, सड़ी हुई अथवा दुर्गन्धयुक्त सामग्री और किसी प्रकार की गंदगी शामिल है के गंगा में प्रवाहित करने पर रोक लगायी गयी है। सरकार के इस नमामि गंगे कार्यक्रम में कई शैक्षणिक संस्थाऐं एवं सामाजिक संगठन सहयोग कर रहे हैं। उनमें से बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा 'गंगा मित्र' नामक समिति एवं वेबसाइट बनाई है। इस समिति ने गंगा, पर्यावरण एवं कौशल से जुड़े कुछ मुद्दों पर सामान्य, वैज्ञानिक/तकनीकी, गैर–तकनीकी एवं प्रशिक्षण हेतु पाठ्यक्रम तैयार किये हैं (गंगा मित्र)। आई.आई.टी., कानपुर द्वारा गंगा सफाई हेतु तकनीकि विकसित की जा रही है।

गंगा के किनारे होने वाले सामूहिक एवं व्यक्तिगत क्रियाकलापों में गंगा की निर्मलता न प्रभावित हो; इसके लिए हरदोई जनपद में नमामि गंगे कार्यक्रम के अन्तर्गत जनभागीदारी बढ़ाने की एक सकारात्मक पहल हुई है। इस पहल को मूर्तरूप देने में अग्रिम भूमिका निभाने वाले श्री अषोक सिंह चंदेल, संयोजक, नमामि गंगे कार्यक्रम, अवध प्रान्त, उत्तर प्रदेश का मानना है कि ''नमामि गंगे कार्यक्रम, गंगा की निर्मलता बढ़ाने के साथ लोगों के दिलों को भी निर्मल बनाने वाला कार्यक्रम है, क्योंकि जनसमुदाय गंगा को प्रदूषण मुक्त करने हेतु स्वैच्छिक सहयोग कर रहा है। स्वैच्छिक सहयोग की भावना दिलों में निर्मलता के बिना सम्भव नहीं है''।

हरदोई जनपद में गंगा की गोद में विकसित होने वाले पांच विकासखण्डों यथा– हरपालपुर, सांडी, बिलग्राम, माधौगंज एवं मल्लावाँ की 25 ग्राम पंचायतों को सामाजिक व पर्यावरणीय परिवर्तन हेतु केन्द्रीय भूमिका में रखा गया है। प्रत्येक ग्राम पंचायत स्तर पर नमामि गंगे कार्यक्रम हेतु एक संयोजक एवं एक सहसंयोजक सक्रिय है। इन विकासखण्डों में गंगा के किनारे पांच घाटों/मेला एवं अन्तेयष्टि स्थलों (राजघाट, मेहंदीघाट, बेरियाघाट, आंकिनघाट एवं सढ़ियापुर (जरैला) को लक्ष्य मानकर नमामि गंगे कार्यक्रम को आगे बढ़ाया जा रहा है। प्रत्येक गंगा घाट पर एक घाटसमिति कार्यरत है। प्रत्येक घाटसमिति में 15 सदस्य होते हैं, जिनमें डोमराजा, पण्डा (दाहसंस्कार में सहयोग करने वाले), केवट (नाविक), नाई एवं माली के अतिरिक्त स्थानीय कृषक, गंगा भक्त एवं सामाजिक कार्यकर्ता गंगा स्वच्छता हेतु विभिन्न भूमिकाएं निभाते हैं। यह सदस्य, मृतकों के परिवारजनों द्वारा लाशों को गंगा में सीधे प्रवाहित न करने हेतु प्रेरित करने के साथ पर्यावरणीय नुकसान से भी अवगत कराते हैं। मृतक के परिवारजनों को समझाकर

गंगा के किनारे मिट्टी में शव को दफन कराते हैं। समिति के सदस्य गंगा के किनारे होने वाले मुण्डन संस्कारों, अन्तिम क्रिया के समय के बाल कटवाने से होने वाले गंगा प्रदूषण से भी बचाव कराया जा रहा है। गंगाघाट के मेलों– रामनगरिया, कार्तिक पूर्णिमा, माघ पूर्णिमा एवं गंगा–दशहरा के समय लोगों से गंगा को प्रदूषण मुक्त रखने का प्रण करवाते हैं। जिससे ग्रामीण सामाजिक संरचना में पर्यावरण संरक्षण के प्रति चेतना का संचार हुआ है। लोग परम्पराओं में लचीलापन लाकर कर्मकाण्डों के स्वरूप को बदल रहे हैं, जिसे समाज की स्वीकारोक्ति मिलना आरम्भ हो चुकी है।

केस अध्ययन

गंगा से 18 किमी दूर एक गांव में कुछ परिवारों में परम्परानुसार मृतक का दाहसंस्कार न करके शव को गंगा में सीधे प्रवाहित कर दिया जाता था। लगभग 11 वर्ष पूर्व जब उस परिवार के बुजुर्ग का देहावसान हुआ तो, परिवार पढ़ेलिखे युवाओं ने जागरूकता के कारण अन्तिम संस्कार की प्रवाह विधि का विरोध किया, लेकिन रूढ़ि का रूप ले चुकी परम्परा को तोड़ने के लिए घर के बुजुर्ग तैयार नहीं हुए। इस घटना के 5 वर्ष बाद परिवार में बीमार युवा बहू की मृत्य हो गयी, उसका अन्तिम संस्कार गंगा में प्रवाह विधि से किया गया। दोनों की मृत्यु गर्मी ऋतु के मई माह में हुई थी, गर्मी में गंगा का जलप्रवाह धीमा एवं धारा पतली हो जाती है। फिर भी परम्परा के अनुपालन में इस परिवार ने कर्मकाण्डों के स्वरूप को नहीं छोड़ा। सन् 2018 में अन्य बुजुर्ग की मृत्यु जन्माष्टमी के दिन हुई उस समय गंगा बेसिन में बाढ़ होने के कारण खुली जमीन नहीं थी। नमामि गंगे कार्यक्रम की गंगाघाट समिति के सदस्यों के प्रभाव से इस परिवार ने शव को गंगा मे प्रवाह करने की परम्परा को तोड़ते हुए शव को जमीन में दफन कर पर्यावरण संरक्षण की ओर कदम बढ़ा दिया। लेकिन उस ग्राम के पुरोहित ने निजी लाभ के लिए तेरहवीं संस्कार (प्रचलन के अनुसार मष्त्यु के बाद 13 दिन के अन्दर होना चाहिए) को बढ़ाकर 15वें दिन किया।

सामाजिक पारिस्थितिकी पर नमामि गंगे कार्यक्रम का प्रभाव

केन्द्रीय प्रदूषण नियन्त्रण बोर्ड (CPCB 2019) की रिपोर्ट के अनुसार गंगा में गिरने वाले सीवेज, औद्योगिक कचरे एवं विभिन्न प्रकार के प्रदूषण से न केवल उसकी निर्मलता प्रभावित हुई है अपितु बिना शोधन के उसका जल पीने व नहाने योग्य नहीं है। इस प्रदूषण के लिए 1100 औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले अपशिष्ट, सीवेज एवं अन्य मानव क्रियाएं जिम्मेदार हैं। पहले गंगा का पारिस्थितिक तंत्र इतना मजबूत था, कि मानव शवों का प्रभाव नगण्य था, क्योंकि उसमें मौजूद कछुओं के लिए वह कुछ घंटों का भोजन होता था। लेकिन मानव के अतिहस्तक्षेप के कारण गंगा में कछुओं एवं डॉलफिन के साथ किनारों पर उगने वाली घास एवं जलीय पौधों के आस्तित्व को समाप्त कर दिया है। गंगा जल सम्पदा के साथ ही व्यापार हेतु जलमार्ग भी प्रस्तुत करती थी, किन्तु कालान्तर में उसका आस्तित्व ही खतरे में आ गया है। आज मानवीय संस्तरण इतना बढ़ गया है, कि वह प्रकृति से भी दूरी बनाने लगा है। अब गंगा के किनारे झाऊ

(एक घास) तो दिखाई नहीं पड़ता, और गंगा का आस्तित्व भी खतरे में है। जबकि उत्तर भारत में प्रकृति और मानव सामूहिकता पर एक कहावत प्रचलित थी–

जहाँ गंगा, वहाँ झाऊ।
जहाँ पंडित, वहाँ नाऊ।

गंगा के मानवजनित खतरों से जलीय जीवों के साथ मानव जीवन भी संकट में है। स्थिति को नियन्त्रित करने हेतु सीवेज को सीधे गंगा में गिरने से रोकने हेतु सरकार ने कानपुर एवं अन्य शहरों के गंदे नालों की दिशा बदलना आरम्भ कर दिया है। औद्योगिक अपशिष्ट के गंगा में प्रवाह रोकने के लिए टेनरियों को विस्थापित किया गया है। स्थानीय स्तर पर समाजसेवी संगठनों एवं जनसहभागिता से नमामि गंगे कार्यक्रम का प्रभाव दिखाई देने लगा है। जिसकी सराहना अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी होने लगी है। हवाई देश के सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश एम0डी0 विल्सन ने द इकॉनामिक टाइम्स (2019) को दिये गये एक इण्टरव्यू में कहा था कि ''गंगा सफाई हेतु यह एक अतुल्य सामुदायिक परियोजना है, जिसके लिए एक भारतीय समाधान सार्थक होगा, जिसमें पौराणिक दृष्टिकोण समाहित हो। उन्होंने विश्वास प्रकट किया कि भारत के पास एक सांस्कृतिक शक्ति है जो गंगा को साफ कर सकेगी एवं ग्लोबल वार्मिंग के वर्तमान परिदृश्य को बदलने में योगदान देगी''।

निष्कर्ष

समाज सदैव ही प्रकृति के साथ स्वस्थ रहा है। आधुनिक तकनीकियों के माध्यम से मानव ने विलासितापूर्ण जीवन जीने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अतिदोहन किया है, जिससे धरती पर पर्यावरणीय संकट बढ़ा है। गंगा जैसी सदानीरा नदियों का पारिस्थितिक तंत्र बिगड़ने लगा है। भारत सरकार द्वारा चलाये जा रहे नमामि गंगे कार्यक्रम के साथ जुड़कर नागर समाज द्वारा मानव विचार, व्यवहार, एवं कर्मकाण्डों के स्वरूपों में परिवर्तन ला रहे हैं। परिणामस्वरूप लोगों ने गंगा में शवों के प्रवाह की परम्परा पर लगभग रोक लगा दी है, किन्तु गंगा उद्धार हेतु भगीरथी प्रयास बाकी है

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 *AEguttara-Nikaya* (1885–1990) eds. R. Morris and E. Hardy, London: Pali Text Society.

2 Bellah, Robert N. *Durkheim and ritual* (in Ed. Jeffrey C. Alexander, and Philip Smith, 2008) The Cambridge companion to Durkheim, UK, Cambridge University Press, 2008.

3 CPCB (2019) *Ganga River water unfit for direct drinking, bathing: CPCB*, The Economic Times, May 30, 2019. Seen on 24-07-2019 https://economic times. indiatimes.com.

4 Dayal, Raghu (2016) *Dirty Flows the Ganga: Why Plans to Clean the River Have Come a Cropper*, EPW, Vol. LI no. 25.

5 Durkheim, Emile (1912/1995) *The Elementary forms of Religious Life*, (Translated by Karen E. Fields) New York, The Free Pres.

6 GaruapuraGa (1890) *UttarakhaGa (Pretakalpa).* Edited by J. Vidyâsâgara. Calcutta, [Summary in GaruapuraGa-Saroddhara (edited by Abegg) 8–27].

7 Gennep Arnold van (1960) *The Rites of Passage*, (Translated by Monika B Vizedom and G.L. Caffee) University of Chicago Press.

8 Goffman, Erving (1967) *Interaction Ritual*. New York: Doubleday.

9 Government of India (2016) *River Ganga (Rejuvenation, Protection and Management) Authorities Order- 2016*.

10 The Economic Times (2019) *Clean Ganga scheme fantastic community project: Hawaii SC judge Michael D Wilson*, April 9, 2019. Seen on 24-07-2019 https:// economictimes. indiatimes.com

11 Marriott Mckim *Reviewed Works on Religion and Society among the Coorgs of South India* by M. N. Srinivas Source: American Anthropologist, New Series, Vol. 55, No. 3, 1953, pp. 426-428.

12 Michaels Axel *Homo Ritualis: Hindu Ritual and Its Significance for Ritual Theory*, New York, Oxford University Press, 2016.

13 Quah, Stella (2007) Health and Culture, in (eds. George Ritzer 2007), ***Blackwell Encyclopedia of Sociology***, Oxford, Blackwell Publishing Ltd.

14 Sahoo, Kalyanamalini *Rituals of death in Odisha: Hindu religious beliefs and socio-cultural practices*, International Journal of Language Studies, Vol. 8 Issue 4, 2014, p29-48. Ganga Mitra http://gangamitra.com